

दशरथकृत शनि स्तोत्र

Dashrath Shani Stotra

दशरथकृत शनि स्तोत्र शनिदेव की संस्कृत स्तुति है, जिसे पद्मपुराण के अनुसार श्रीराम के पिता राजा दशरथ ने गाया था। "नमः कृष्णाय नीलाय" से शुरू होने वाले दस श्लोकों में वे शनिदेव को उनके अनेक नामों और रूपों से नमस्कार करते हैं, और प्रसन्न होकर शनिदेव वचन देते हैं कि इसका पाठ करने वालों को पीड़ा नहीं देंगे। भक्त इसे शनिवार को और साढ़ेसाती में पढ़ते हैं।

श्लोक १

नमः कृष्णाय नीलाय शितिकण्ठनिभाय च ।

नमः कालाग्निरूपाय कृतान्ताय च वै नमः ॥१॥

श्याम और नील वर्ण वाले, शिव के नीले कंठ जैसी आभा वाले शनिदेव को नमस्कार। कालाग्नि के समान रूप वाले और सबका अंत करने वाले को नमस्कार।

श्लोक २

नमो निर्मासदेहाय दीर्घश्मश्रुजटाय च ।

नमो विशालनेत्राय शुष्कोदरभयाकृते ॥२॥

मांसरहित दुबले शरीर, लंबी दाढ़ी और जटाओं वाले को नमस्कार। बड़े नेत्रों वाले, सूखे पेट और भयानक आकृति वाले को नमस्कार।

श्लोक ३

नमः पुष्कलगात्राय स्थूलरोम्णेऽथ वै नमः ।

नमो दीर्घाय शुष्काय कालदंष्ट्र नमोऽस्तु ते ॥३॥

विशाल शरीर और घने रोमों वाले को नमस्कार। लंबे और दुबले शरीर वाले को नमस्कार। हे काल जैसी दाढ़ों वाले, आपको नमस्कार हो।

श्लोक ४

नमस्ते कोटराक्षाय दुर्निरीक्षाय वै नमः ।

नमो घोराय रौद्राय भीषणाय कपालिने ॥४॥

गहरी आँखों वाले, जिन्हें देख पाना कठिन है, आपको नमस्कार। घोर, रौद्र, भीषण और कपालधारी को नमस्कार।

श्लोक ५

नमस्ते सर्वभक्षाय वलीमुख नमोऽस्तु ते ।
सूर्यपुत्र नमस्तेऽस्तु भास्करेऽभयदाय च ॥५॥

सबको प्रसने वाले, आपको नमस्कार; हे झुर्रियों वाले मुख वाले, आपको नमस्कार हो । हे सूर्यपुत्र, अभय देने वाले भास्कर-नंदन, आपको नमस्कार हो ।

श्लोक ६

अधोदृष्टे नमस्तेऽस्तु संवर्तक नमोऽस्तु ते ।
नमो मन्दगते तुभ्यं निस्त्रिंशाय नमोऽस्तु ते ॥६॥

हे नीची दृष्टि वाले, आपको नमस्कार हो; हे प्रलयकारी संवर्तक, आपको नमस्कार हो । हे मंद गति वाले, आपको नमस्कार; खड़्गधारी, आपको नमस्कार हो ।

श्लोक ७

तपसा दग्धदेहाय नित्यं योगरताय च ।
नमो नित्यं क्षुधार्ताय अतृप्ताय च वै नमः ॥७॥

तप से जले शरीर वाले और सदा योग में लीन रहने वाले को नमस्कार । सदा भूख से पीड़ित और कभी तृप्त न होने वाले को नमस्कार ।

श्लोक ८

ज्ञानचक्षुर्नमस्तेऽस्तु कश्यपात्मजसूनवे ।
तुष्टो ददासि वै राज्यं रुष्टो हरसि तत्क्षणात् ॥८॥

हे ज्ञान रूपी नेत्र वाले, कश्यप के पुत्र सूर्य के पुत्र, आपको नमस्कार हो । आप प्रसन्न हों तो राज्य दे देते हैं और रुष्ट हों तो उसी क्षण छीन लेते हैं ।

श्लोक ९

देवासुरमनुष्याश्च सिद्धविद्याधरोरगाः ।
त्वया विलोकिताः सर्वे नाशं यान्ति समूलतः ॥९॥

देवता, असुर, मनुष्य, सिद्ध, विद्याधर और नाग, जिन पर भी आपकी दृष्टि पड़ती है, वे सब जड़ से नष्ट हो जाते हैं ।

श्लोक १०

प्रसादं कुरु मे देव वरार्होऽहमुपागतः ।
एवं स्तुतस्तदा सौरिर्ग्रहराजो महाबलः ॥१०॥

हे देव, मुझ पर कृपा कीजिए; मैं वर पाने योग्य होकर आपके पास आया हूँ । इस प्रकार स्तुति किए जाने पर तब महाबली ग्रहराज सूर्यपुत्र शनि (राजा से बोले) ।

स्रोत: Padma Purana, Uttara Khanda, adhyaya 33, verses 28 to 37 (Sanskrit Wikisource: पद्मपुराणम्/खण्डः ६ (उत्तरखण्डः)/
अध्यायः ०३३), cross-checked line by line with BhaktiBharat.com (mantra/dashratha-shani-sotra) and
onlinejyotish.com (shani-stotra)

ये अर्थ हमारा पहला मसौदा हैं। अभी किसी विद्वान ने इनकी जाँच नहीं की है। कोई भूल दिखे तो हमें ज़रूर बताएँ।

getnitya.com/hi/shani/dashrath-shani-stotra/